ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 21-10-2022

नैनीताल(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2022-10-21 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2022-10-22	2022-10-23	2022-10-24	2022-10-25	2022-10-26
वर्षा (मिमी)	1.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	19.0	20.0	20.0	20.0	20.0
न्यूनतम तापमान(से.)	7.0	7.0	7.0	7.0	6.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	80	75	70	70	70
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	40	35	30	30	30
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	6.0	6.0	6.0	6.0	6.0
पवन दिशा (डिग्री)	320	320	320	320	320
क्लाउड कवर (ओक्टा)	2	2	1	1	1

मौसम सारांश / चेतावनी:

आगामी पांच दिनों में, मौसम साफ रहेगा लेकिन आज 21 अक्टूबर को कहीं-कहीं बूंदा-बांदी हो सकती है। अधिकतम एवम् न्यूनतम तापमान क्रमश: 19.0 से 20.0 व 6.0 से 7.0 डिग्री सेल्सियस रहेगा| हवा के 6.0 किमी/घंटे की गति से उत्तर-उत्तर-पश्चिम दिशा से चलने का अनुमान है। ईआरएफएस के अनुसार, 26 अक्टूबर से 1 नवम्बर के दौरान राज्य में वर्षा सामान्य से अधिक, अधिकतम व न्यूनतम तापमान सामान्य रहने का अनुमान हैं।

सामान्य सलाहकार:

आईएमडी मौसम पूर्वानुमान और आपके स्थान की कृषि मौसम संबंधी सलाह अब मेघदूत मोबाइल ऐप पर अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध है। कृपया निम्न लिंक से डाउनलोड करें: एंड्रॉयड: https://play.google.com/store/apps/details?id=com.aas.meghdoot आईओएस: https://apps.apple.com/in/app/meghdoot/id1474048155

लघु संदेश सलाहकार:

आगामी पांच दिनों में, मौसम साफ रहेगा। गाय-भैंसों में "लंपी स्किन डिजीज" जो कि एक वायरल बीमारी है से बचाव हेतु पशुओं का टीकाकरण अवश्य कराएं।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
गेहूँ	भावर क्षेत्र में, गेहूँ की समय से बुवाई हेतु असिंचित अवस्था में गेहूँ की उन्नतशील किस्मे जैसे-सी 306, पी बी डब्लू 175, पी बी डब्लू 65, पी बी डब्लू 396, पी बी डब्लू 299, पी बी डब्लू 644 की बुवाई अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़े में करे।
चावल	जिन किसान भाईयों कि धान की फसल कट गई है उसकी मड़ाई करें। भण्डारण के लिए धान को काटकर अच्छी प्रकार सुखा लें ताकि उसमें नमी की मात्रा 12-14 प्रतिशत तक आ जाएं।
सोयाबीन	फसल परपक्क होने पर पत्तियॉ पीली होकर गिरने लगती है, ऐसी अवस्था पर फसल की कटाई करें। फसल को 2-3 दिन तक सुखाने के बाद डंडों से पीटकर दाने अलग कर लें।
जौ	असिंचित दशा में, नीचे एवं मध्यम उँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में जौ की फसल की बुवाई इस माह के दूसरे पखवाड़े में करे।
चना	कम उँचाई वाले क्षेत्रों में, सिंचित दशा में, चने की फसल की बुवाई इस माह के दूसरे पखवाड़े में करें।
गाजर	किसान भाई, भावर व घाटी क्षेत्रों में गाजर की बुवाई इस माह कर सकते है।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
प्याज	इस माह, किसान भाई प्याज की स्थानीय किस्मों के बीजों की बुवाई नर्सरी में कर सकते है।
गोभी	मध्यम उँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रो मे, फूलगोभी, बन्दगोभी बीजू फसलों की पौध का प्रतिरोपण करें।
बैंगन	यदि बैंगन का खेत बहुत ज्यादा नहीं है और तना बेधक कीट की समस्या है तो ग्रसित शाखा को ग्रसित भाग के एक इंच नीचे से तेज चाकू या ब्लेड से काटकर अलग कर दें। इसमें दवा डालने की आवश्यकता नहीं होती है और शाखाएं फिर से आ जाती है।
मेंथी	किसान भाई मेथी की बुवाई करें।
सेब	सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम इत्यादि फल वृक्षों की गिरी पत्तियों को इकट्ठा करके गड्ढे में डाले तथा बीमार एवं रोगग्रसित पत्तियों को जलाकर नष्ट कर दें।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भेंस	लंपी स्किन डिजीज एक वायरल बीमारी होती है, जो गाय-भैंसों में होती है। लम्पी स्किन डिज़ीज़ में शरीर पर गांठें बनने लगती हैं, खासकर सिर, गर्दन, और जननांगों के आसपास। धीरे-धीरे ये गांठे बड़ी होने लगती हैं और घाव बन जाता है। एलएसडी वायरस मच्छरों और मक्खियों जैसे खून चूसने वाले कीड़ों से आसानी से फैलता है। साथ ही ये दूषित पानी, लार और चारे के माध्यम से भी फैलता है। लम्पी स्किन डिजीज पशुओं को तेज बुखार आ जाता है और दुधारु पशु दूध देना कम कर देते हैं, मादा पशुओं का गर्भपात हो जाता है, पशुओं की मौत भी हो जाती है। रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए, अगर पशुशाला में या नजदीक में किसी पशु में संक्रमण की जानकारी मिलती है, तो स्वस्थ पशु को हमेशा उनसे अलग रखना चाहिए। रोग के लक्षण दिखाने वाले पशुओं को नहीं खरीदना चाहिए, मेला, मंडी और प्रदर्शनी में पशुओं को नहीं ले जाना चाहिए। पशुशाला में कीटों की संख्या पर काबू करने के उपाय करने चाहिए, मुख्यत: मच्छर, मक्खी, पिस्सू और चिंचडी का उचित प्रबंध करना चाहिए। रोगी पशुओं की जांच और इलाज में उपयोग हुए सामान को खुले में नहीं फेंकना चाहिए। अगर अपने पशुशाला पर या आसपास किसी असाधारण लक्षण वाले पशु को देखते हैं, तो तुरंत नजदीकी पशु अस्पताल में इसकी जानकारी देनी चाहिए। एक पशुशाला के श्रमिक को दुसरे पशुशाला में नहीं जाना चाहिए, इसके साथ ही पशुपालकों को भी अपने शरीर की साफ़–सफाई पर भी ध्यान देना चाहिए। अगर लम्पी स्किन डिजीज से संक्रमित पशु की मौत हो जाती है, तो उसकी बॉडी को सही तरीके से डिस्पोज करना चाहिए ताकि ये बीमारी और ज्यादा न फैले। इसलिए पशु की मौत के बाद उसे जमीन में दफना देना चाहिए। यदि कोई पशु लम्बे समय तक त्वचा रोग से ग्रस्त होने के बाद मर जाता है, तो उसे दूर ले जाकर गड्ढे में दबा देना चाहिए। आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर ऑन इक्वाइन (आईसीएआर-एनआरसीई), हिसार (हरियाणा) ने आईसीएआर-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई), इज्जतनगर, उत्तर प्रदेश के सहयोग से एक वैक्सीन "लंपी-प्रोवैकइंड" विकसित किया है। इसलिए पशुओं का टीकाकरण अवश्य कराएं। अगर सही समय पर पशुओं का खयाल रखा जाए और दूसरे पशुओं से दूर रखा जाए तो पशुओं को बचाया जा सकता है।